

फ़्रांस : भारत का वास्तविक सहयोगी

यह एडिटरियल 19/07/2023 को 'हृदि बजिनेसलाइन' में प्रकाशित [“India, France and what keeps their ties ticking”](#) लेख पर आधारित है। इसमें फ़्रांस के साथ भारत के राजनयिक संबंधों की सुसंगतता और इसे और भी सुदृढ़ कर सकने की गुंजाइश के बारे में चर्चा की गई है।

प्रलमिस के लिये:

[भारत-फ़्रांस रणनीतिक साझेदारी](#), [राफेल सौदा](#), [नाटो](#), [AUKUS](#)

मेन्स के लिये:

भारत-फ़्रांस संबंध

[भारत-फ़्रांस रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष](#) पूरे होने का उत्सव मनाना प्रधानमंत्री की दो दविसीय फ़्रांस यात्रा के शीर्ष एजेंडे में शामिल था और यात्रा का अंत वभिनिन समझौतों और रक्षा सौदों के संपन्न होने के साथ हुआ।

इस अवसर पर दोनों देशों ने सुरक्षा, पर्यावरण, नवीकरणीय ऊर्जा आदि विषयों को कवर करने वाला **‘इंडो-पैसिफिक रोडमैप’** जारी किया और इसके साथ ही व्यापक संबंध के लिये **‘होराइज़न 2047’** एजेंडे की घोषणा की गई जो गहन सैन्य-औद्योगिक संबंध, डिजिटल प्रौद्योगिकियों में सहयोग, नमिन कार्बन अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण, शहरी संक्रमण, व्यापार एवं नविश और लोगों के परस्पर संपर्क जैसे विषयों को अपने दायरे में लेता है।

जबकि **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) के P5 देशों** में से प्रत्येक के साथ ही भारत एक अद्वितीय संबंध रखता है, जो बात भारत-फ़्रांस संबंधों को वशिषिट बनाती है, वह है **सही-गलत के नरिणय के बना भू-राजनीति (geopolitics sans value judgements)**। यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री ने जतिने भी देशों का दौरा किया है, वशिष रूप से पश्चिमी वशि्व में, **उनमें फ़्रांस ही संभवतः वह देश है जिसके साथ भारत सबसे अधिक आपसी हति या समझौते का आधार रखता है।**

फ़्रांस के साथ भारत के राजनयिक संबंध

■ संबंध के स्तंभ:

- भारत और फ़्रांस लंबे समय से सांस्कृतिक, व्यापारिक और आर्थिक संबंध साझा करते रहे हैं। वर्ष 1998 में हस्ताक्षरित ‘भारत-फ़्रांस रणनीतिक साझेदारी’ (India-France strategic partnership) ने समय के साथ महत्त्वपूर्ण प्रगति हासिल की है और वर्तमान में गहन नकिट बहुआयामी संबंध में वकिसति हो गया है जो सहयोग के वभिनिन क्षेत्त्रों तक वसित्त है।
- दोनों देशों ने अपने संबंध में तीन स्तंभों पर सुदृढ़ता बनाए रखी है:

- एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना
- रणनीतिक स्वायत्तता और गुटनरिपेक्षता में दृढ़ वशिवास
- स्वयं की संधि और गठबंधन के दायरे में दूसरे को शामिल करने के मामले में संयम

- इस तरह और कई अन्य तरीकों से दोनों देशों का संबंध भारत का दुनिया भर में बनाई गई अन्य प्रमुख साझेदारियों से अलग स्वरूप रखता है।

■ भारत के मामलों पर फ़्रांस की प्रतिक्रिया:

- भारत-फ़्रांस संबंध एक-दूसरे की रणनीतिक स्वायत्तता के सम्मान पर नरिमति हैं। फ़्रांस भारत के आंतरिक मामलों या उसकी वदिश नीतिविकिल्पों पर टपिपणी करने से इनकार करने में तटस्थ बना रहा है।
- जबकि फ़्रांस ने यूक्रेन में रूस के युद्ध पर पश्चिमी देशों की प्रतिक्रिया में अग्रणी भूमिका नभिाई है, उसने अन्यपश्चिमी देशों की तरह भारत पर अपना रुख बदलने के लिये कोई सार्वजनिक दबाव नहीं बनाया।

- यहाँ तक कि जब भारत ने [UNSC](#) और [UNGA](#) में इस संबंध में लाए गए [संकल्प पर मतदान में भागीदारी नहीं](#) की, तब भी फ़्रांस

ने नरिशा का एक शब्द भी व्यक्त नहीं किया, जबकि UNSC में लाया गया एक संकल्प (संघर्ष क्षेत्र के अंदर नरिबाध मानवीय सहायता सुनिश्चित करने के संबंध में) फ्रांस द्वारा ही मैक्सिको के साथ प्रस्तुत किया गया था।

- उल्लेखनीय है कि जब भारत ने **पोखरण-II परमाणु परीक्षण** किया था तब भी UNSC में फ्रांसीसी राजनयिक भारत पर प्रतर्बिध लगाने के अमेरिकी नेतृत्व वाले पहल में शामिल नहीं हुए थे।

- यहाँ तक कि फ्रांस तारापुर रिएक्टरों को यूरेनियम की आपूर्ति से भी पीछे नहीं हटा।

■ मूल में रक्षा साझेदारी:

- भारत-फ्रांस संबंधों के मूल में रक्षा साझेदारी है; अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में फ्रांस कहीं अधिक इच्छुक और उदार भागीदार के रूप में सामने आया है।
- **राफेल सौदे** से लेकर इस वमिन के समुद्री संस्करण के 26 वमिनों के नवीनतम अधिग्रहण तक, फ्रांस भारत को अपनी कुछ बेहतरीन रक्षा प्रणालियों सौंपने का इच्छुक बना रहा है।
- इस बीच, फ्रांस द्वारा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से पहले ही भारत को **छह स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुबबियों** के नरिमाण में मदद मलि चुकी है, जबकि नौसेना के लिये पनडुबबियों की घटती संख्या को बढ़ाने के लिये तीन और पनडुबबियाँ खरीदी जा रही हैं।

■ नाटो प्लस पर रुख में समानता:

- फ्रांस ने सार्वजनिक रूप से घोषणा कर रखी है कि वह **नाटो प्लस (NATO+)** भागीदारी योजनाओं को अस्वीकार करता है, जिसके तहत ट्रांस-अटलांटिक एलायंस का जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया और यहाँ तक कि भारत के साथ प्रत्यक्ष संबंध बन जाएगा।
- भारत ने भी इस योजना को यह कहते हुए खारजि कर दिया है कि नाटो “ऐसा टेम्पलेट या खाका नहीं है जो भारत पर लागू होता है”।

■ रणनीतिक साझेदारी:

- फ्रांस ‘क्वाड-प्लस’ गठबंधन के प्रति भी गैर-आशंकित बना रहा है, जिसका वचिर सरवप्रथम 2020 में प्रकट किया गया था (लेकिन **AUKUS समझौते पर अमेरिका-फ्रांस के बीच मतभेद** की स्थिति में जैसे टाल दिया गया था)।
- फ्रांस ही एकमात्र देश है जिसके साथ भारतीय नौसेना ने अब तक कोई संयुक्त गश्त की है और भविष्य की योजनाओं के तहत द्विपक्षीय आधार पर दोनों नौसेनाओं द्वारा पोर्ट कॉल एवं सैन्य-सर्वेक्षण के लिये रीयूनियन, न्यू कैलेडोनिया एवं फ्रेंच पोलनिशिया जैसे फ्रांसीसी क्षेत्र और यहाँ तक कि भारत के अंडमान द्वीप समूह में संयुक्त अभ्यास किये जा सकते हैं।
- हदि-प्रशांत पर हाल ही में जारी ‘इंडिया-फ्रांस इंडो-पैसिफिक रोडमैप’ भी स्पष्ट करता है कि कोई भी पक्ष दूसरे को अपने अन्य किसी क्षेत्रीय सैन्य गठबंधन में खींचने का प्रयास नहीं कर रहा है।

चुनौतियाँ

- फ्रांस और भारत के बीच राजनयिक संबंध सकारात्मक होने के बावजूद दोनों देश एकमुक्त व्यापार समझौते (FTA) का अभाव रखते हैं, जो व्यापार क्षमता के पूर्णरूपेण साकार हो सकने को सीमिति करता है। भारत-EU **ब्रांड-बेसड ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट एग्रीमेंट (BITA)** पर सुस्त प्रति इस समस्या को और बढ़ाती है।
- हालाँकि दोनों देश एक मज़बूत रक्षा साझेदारी रखते हैं, लेकिन उनकारक्षा एवं सुरक्षा सहयोग अलग-अलग प्राथमिकताओं एवं दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है। भारत का क्षेत्रीय फोकस और इसकी ‘गुटनरिपेक्ष’ नीति किभी-कभी फ्रांस के वैश्विक हितों से टकराहट भी उत्पन्न कर सकती है।
- फ्रांस ने भारत द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकारों की अपर्याप्त सुरक्षा पर भी चिंता जताई है, जिससे भारत के भीतर कार्य करने वाले फ्रांसीसी व्यवसायों पर असर पड़ रहा है।

आगे की राह

■ एक-दूसरे को सशक्त बनाने के लिये सदृश महत्त्वाकांक्षाओं का लाभ उठाना:

- एक जटलि भू-राजनीतिक परदृश्य में रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने के साझा दृढ संकल्प ने दोनों शक्तियों को कुछ हद तक विश्वास और व्यावहारिक साझेदारी विकसित करने में मदद की है।
- फ्रांस इतनी शक्तिरिखता है कि वह भारत को राजनयिक, सैन्य, अंतरिक्ष और परमाणु क्षेत्रों में कुछ न कुछ प्रदान कर सकता है।

- रूसी आक्रामकता या अफ्रीका में आतंकवाद जैसे खतरों के संदर्भ में जब व्यापार और रक्षा सहयोग की बात आती है तो भारत फ्रांस के लिये पर्याप्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

- दोनों देश अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने या यहाँ तक कि ऐसे अन्य देशों को संतुलित करने में एक-दूसरे का समर्थन कर सकते हैं, जनि पर उनमें से एक अत्यधिक नरिभर हो।

■ हदि-प्रशांत में बेहतर सहयोग:

- ‘इंडो-पैसिफिक’ की अवधारणा ने पहले से फल-फूल रहे फ्रांस-भारत संबंधों के लिये एक उपयोगी ढाँचा प्रदान किया है। हदि महासागर में अपने वदिशी क्षेत्रों और सैन्य ठकानों के कारण फ्रांस हदि महासागर की स्थिरता में क्वाड भागीदारों से कहीं अधिक प्रत्यक्ष रुचि रखता है।

- दोनों देशों के बीच इंडो-पैसिफिक फोरम रणनीतिक हितों और द्विपक्षीय सहयोग को सुनिश्चित करने में बेहतर सहायता प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हो सकता है।

■ फ्रांस के साथ सहयोग के संभावित क्षेत्र:

- नज्दी और वदेशी नविश में वृद्धि के साथ घरेलू हथियार उत्पादन का वसितार करने की भारत की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं में फ्रांस एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है।
- दोनों देशों के बीच चर्चा में कनेक्टविटी, जलवायु परिवर्तन, साइबर-सुरक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित सहयोग के विभिन्न उभरते क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिये।

नबिकरष

फ्रांस और भारत विश्व की दो प्रमुख शक्तियाँ हैं (एक यूरोप में, दूसरा एशिया में) जो विश्व के बारे में एक जैसी अवधारणा रखते हैं। वस्तुतः दोनों देश एक स्वतंत्र वदेश नीतिका पालन करते हैं और रणनीतिक स्वायत्तता का पालन करते हैं, जिससे उन्हें उम्मीद है कि वे एक बहुध्रुवीय विश्व को आकार देने में सक्षम होंगे। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन दोनों शक्तियों को एहसास है कि यदि वे मलिकर कार्य करेंगे तो ऐसा होने की अधिक बेहतर संभावना है।

अभ्यास प्रश्न: “फ्रांस, जिसने स्वतंत्र वदेश नीतिका महत्त्व दिया है, एक अनश्चित युग के लिये नए गठबंधन के निर्माण में भारत का स्वाभाविक भागीदार है।” टपिपणी कीजिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/france-india-s-natural-ally>

